International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के सामाजिक एवं राजनीतिक विचार का समग्र विश्लेषण

प्रो. गोपाल प्रसाद[1], राजन कुमार गोंड[2]

[1]आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
[2]शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सारांश

आधुनिक भारत के गौरवमय युग-पुरुष माने जाने वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय का नाम भारतीय राजनीति में बड़े ही अदब के साथ लिया जाता है। यह एक मात्र ऐसे नेता थे जिन्होंने पक्ष-विपक्ष दोनों ही तरफ से सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। उन्होंने राजनीति के नये मापदण्डों का सृजन किया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक ऐसे राजनेता के रूप में जाने जाते हैं जिन्होंने मूल्य खो रही राजनीति में पुनः शुचिता, आदर्श एवं मूल्यों को स्थापित किया और भारत के विकास और सुशासन हेतु भारतीय राजनीति को एक नया प्रतिरूप प्रदान किया।

25 सितम्बर 1916 ई0 को जन्में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी एक बहुआयामी व्यक्तित्व, सरल, सहज और गम्भीरता की प्रतिमूर्ति थे। वे एक महान देशभक्त, कुशल संगठनकर्ता, प्रखर वक्ता, दार्शनिक, दूरदर्शी, अर्थवेत्ता, राजनीतिक तथा प्रबुद्ध साहित्यकार थे जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र सेवा में समर्पित कर दिया।[1]

पंडित दीनदयाल जी सादा जीवन, उच्च विचार और व्यवहार के मूर्तिमान रूप थे इन्होंने प्राचीन भारतीय दर्शन को पुनर्व्यवस्था करते हुए समाज को समता, समानता एवं सर्वोदय पर आधारित जीवन जीने का नवीन मार्ग दिया और एक दर्शन का प्रतिपादन किया जिसे एकात्म मानव दर्शन के नाम से जाना जाता है। एकात्म मानव दर्शन आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं राजनीतिक सिद्धान्तों आदि का समुच्चय हैं। जिसमें विश्व, प्रकृति समाज, व्यक्ति सभी पर सामान्जस्यपूर्ण समरसता, कल्याणकारी जीवन व व्यवसाय हेतु विचार प्रस्तुत किया है।[2]

वर्तमान परिदृश्य में देखा जाय तो राष्ट्र ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व में मानवता मूलक समाज की स्थापना के लिए एकात्म मानव दर्शन पूर्णतः प्रासंगिक है एवं भविष्य में भी इसकी प्रासंगिकता सदैव बनी रहेगी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी जैसे व्यक्तित्व को जानने समझने के लिए हमें न सिर्फ

उनके किये गये कार्य का मूल्यांकन करना पड़ेगा बल्कि उनके सम्पूर्ण जीवन दर्शन को भी रेखांकित करना पड़ेगा तभी हम उनके व्यक्तित्व को आम जनता तक समग्र रूप में ला सकते है।

महत्वपूर्ण शब्द - लोकतांत्रिक, राष्ट्रवाद, मानववाद, स्वावलंबन, आध्यात्मिक, वसुधैव-कुटुम्बकम्, जनसंघ, उदारता सानिध्य, समर्पण, स्वदेशी, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक मूल्य।

प्रस्तावना -

आधुनिक भारत के इतिहास में राजनीतिक के क्षेत्र में एक नाम ऐसा उभर कर आता है जिसने भारतीय राजनीति में समाप्त हो रही शुचिता, नैतिकता, उत्तरदायित्व बोध, निःस्वार्थ सेवा भाव निष्पक्षता जैसे आदि मूल्यों को पुनर्स्थापित करने के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन भर प्रयासरत रहे वे हैं पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी जिन्होंने एकात्म मानववाद के रूप में अपने विचारों की व्याख्या की तथा राष्ट्रवाद दर्शन के रूप में इसे स्थापित करने का प्रयत्न किया। इन्होंने एकात्म मानववाद दर्शन को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया। इन्होंने अपने जीवन के हर पल को पूरी रचनात्मकता व गहराई से जिया है। पत्रकारिता जीवन के समय उनके लेख, शब्द आज भी उपयोगी है। अपने लेखों में उन्होंने बहुत कुछ लिखा है जिसमें एकात्म मानववाद, लोकमान्य तिलक की राजनीति, जनसंघ का सिद्धान्त, अखण्ड भारत आदि अनेक लेखों का एकमात्र अभिप्राय यह था कि भारतवर्ष विश्वपटल पर सदैव उच्चकोटि के स्थान पर कायम रहे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी मूल्य आधारित राजनीति करते हुए भारतीय राष्ट्रीय रजानीति में विपक्ष के सबसे बड़े नेता के रूप में प्रतिष्ठित हुए। भारतीय राजनीति में उन्हें एक राष्ट्रवादी विचारक, कुशल, संगठनकर्ता, प्रखर वक्ता, दार्शनिक, निपुण राजनेता, संवेदनशील व्यक्ति के रूप में याद किया जाता है। उन्हें एक ऐसे प्रभावशाली राजनेता के रूप में जाना जाता है जिन्होंने राष्ट्रहित और राष्ट्र विकास को सर्वोपरि मानते हुए समस्त भौतिक सुख-सुविधाओं, पद, परिवार एवं निजता का परित्याग कर दिया एवं अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के नाम समर्पित कर दिया।3 इस युग पुरुष स्वप्न दृष्टा ने एक ऐसे सह-अस्तित्व, भाईचारा मूल्य आधारित विकसित राष्ट्र का स्वप्न देखा जहाँ आर्थिक समानता हो, सामाजिक लोकतंत्र हो और सभी का विकास हो, सभी को सम्मान मिले, सभी रोजगार युक्त हो, सभी का जीवन गरिमापूर्ण हो एवं सभी का अस्तित्व सुरक्षित हो।

पंडित जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र को समर्पित करते हुए समाज को समता, समानता एवं सर्वोदय पर आधारित जीवन जीने का एक नवीन मार्ग दिया और एक दर्शन का प्रतिपादन किया जिसे एकात्म मानव दर्शन के नाम से जाना जाता है। यह भारतीय व पाश्चात्य ग्रन्थों का अध्ययन एवं स्वयं के

मौलिक चिन्तन द्वारा उन्होंने राष्ट्र एवं समाज के भावी युगानुकूल स्वरूप हेतु अपने विचार प्रस्तुत किये।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म 25 सितम्बर 1916 को भगवान श्री कृष्ण की पावन जन्मभूमि मथुरा जिले के नगला चन्द्रभान ग्राम के पंडित भगवती प्रसाद उपाध्याय एवं गरिमामयी माता रामप्यारी जी के घर हुआ था। भगवती प्रसाद जी भारतीय संस्कृति और परम्परा का पालन करने वाले पुरुष थे बचपन से ही पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी प्रतिभा के धनी थे, इन्होंने हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट, स्नातक एवं परास्नातक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने अत्यन्त विषम परिस्थितियों में अपनी शिक्षा को पूरा किया था इन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज और राष्ट्र की सेवा में समर्पित कर दिया एवं एक महान राष्ट्रवादी विचारक के रूप में स्थापित हुए। राष्ट्र की सेवा में सदैव तत्पर रहने वाले उपाध्याय जी की यह अभिलाषा थी कि भारत को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा शैक्षिक क्षेत्रों में उच्च कोटि का स्थान प्राप्त हो। इनको अपने मातृभूमि से असीम स्नेह एवं प्रेम था। इनका सम्पूर्ण चित्त समग्रता में एकात्म थी। इसलिए रिक्तता वाले क्षेत्रों में स्वयं को समर्पित करने में वह बचपन से ही संलग्न थे। इनको छात्र जीवन में महान लोगों का साथ मिला तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ0 केशवराम बलिराम हेडगेवार का सानिध्य भी उन्हें प्राप्त हुआ और वे 1937 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में शामिल हुए तथा अन्ततः संयुक्त प्रान्त के प्रचारक बने। वे अखिल भारतीय जनसंघ में 1951 में सम्मिलित हुए और दो वर्ष बाद महामंत्री निर्वाचित हुए। दिसम्बर 1967 में वे अखिल भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और वे घर-परिवार से ज्यादा राष्ट्र की सेवा को अधिक श्रेष्ठ मानते थे,[4] उनके इस मौलिक चिंतन जिसमें आर्थिक, सामाजिक शैक्षिक एवं राजकीय सिद्धान्तों का संकलन था, देश के समक्ष प्रस्तुत किया गया। उनके इन्हीं मौलिक मानवीयता मूलक विचारों को एकात्म मानव दर्शन कहा गया। उनकी प्रमुख रचनाएँ : दो योजनाएँ, राजनीतिक डायरी, राष्ट्र चिन्तन, भारतीय अर्थ नीति : विकास की एक दशा, भारतीय अर्थनीति का अवमूल्यन, सम्राट चन्द्रगुप्त, जगद्गुरु शंकराचार्य एवं एकात्म मानववाद प्रमुख हैं।

एकात्म मानववाद सम्बन्धी विचार -

भारत एक लम्बी गुलामी के कारण अपने प्राचीन, संस्कारों, मूल्यों एवं आदर्शों को खे बैठा था, इसके पथ-पदर्शन हेतु प्राचीन भारतीय मूल्यों पर आधारित एक दर्शन का प्रणयन किया जिसे चिंतन जगत में 'एकात्म मानवदर्शन' कहा जाता है।

एकात्म मानववाद का तात्पर्य है मानव जीवन तथा सम्पूर्ण प्रकृति के एकात्म सम्बन्धी दर्शन। यद्यपि यह सच है कि मानव जीवन के विविध अवयवों तथा मानव प्रकृति की विभिन्न शक्तियों में विविधता होती है, किन्तु यह विविधिता आंतरिक एकता के ही विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति हुआ करती है।

एकात्म मानव दर्शन व्यक्ति जीवन का भी उसके सभी अंगों का ध्यान में रखते हुए संकलित विचार करता है। मनुष्य, शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का संकल्ति रूप है। इसलिए मानव का सर्वांगीण विकास उसके शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा सबका संकलित विचार हैं।[5]

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद के नाम से विचारों का एक समूह प्रतिपादित किया। उन्हेंने अप्रैल, 1965 में पुणे में दिये गये अपने चार व्याख्यानों में इसे एक व्यवस्थित रूप से जनसंघ में चर्चा के लिए पहले ही प्रस्तुत किया था और जनवरी 1965 के विजयवाड़ा अधिवेशन में मौलिक वैचारिकी के रूप में अपनाया गया था। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने दिसम्बर 1967 में कालीकट में जनसंघ के 14वें अधिवेशन में अपने अध्यक्षीय भाषण में व्यवहारिक राजनीति में एकात्म मानववाद को लागू करने के लिए व्यवस्थित रूप से शुरूआत की। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का मानना था कि जिस प्रणाली में मनुष्य को प्रधानता प्राप्त नहीं हैं, अंततः उसका पतन निश्चित है एकात्म मानववाद के रूप में उनका बौद्धिक प्रवचन मनुष्य के स्थान को सही परिप्रेक्ष्य में फिर से स्थापित करता है।[6]

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक विचार -

पंडित दीनदयाल उपाध्याय केवल राजनीतिक उपदेशक नहीं थे। उनके जीवन से राजनीति दलों के कार्यकर्ताओं को सीख लेनी चाहिए, उनका स्वयं का जीवन प्रेरणादायी अनुशासित तथा निष्कलंक था तथा राजनीति उनके लिए राष्ट्र की सेवा के लिए साधन थी, केवल सत्ता सुख के लिए नहीं थी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी राजनीति में क्यों आए? इस प्रश्न का उत्तर है, कि उन्होंने राष्ट्रनीति के लिए राजनीति में पदार्पण किया। वे चाहते थे कि देश की सत्ता उसके हाथों में जानी चाहिए, जो राजनीति का उपयोग राष्ट्रनीति के लिए कर सकें।

19वीं शताब्दी व 20वीं शताब्दी में भारतीय राजनीति के महान विचारक और राजनेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय राजनीति में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का प्रयास किया। एक महानायक की भांति भारत की सभ्यता, संस्कृति और परम्परा को सहेजने का अतुल्य प्रयास किया। वह भारत की प्रकृति और परम्परा के अनुरूप एक राजनीतिक दर्शन विकसित करना चाहते थे, जो भारत की सर्वांगीण प्रगति सुनिश्चित कर सके। उन्होंने एकात्म मानववाद के राजनीति दर्शन को प्रतिपादित किया जो भारतीय जनसंघ और बाद में भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए आधारशिला बन गया। उनका मानना था कि भारतीय राजनीति को भारत की संस्कृति और जीवन दर्शन से अलग करके नहीं देखा जा सकता। समाजवाद और लोकतंत्र दोनों वर्ग-संघर्ष के परिणाम हैं। यद्यपि दोनों का उद्देश्य इस संघर्ष को समाप्त करना और एकता स्थापित करना है।[7] जिस तरह से उन्होंने इस उद्देश्य के लिए अपनाया है, उसने केवल इन वर्गों का रूप बदला है, उन्होंने समाप्त नहीं किया है और इसलिए यह संघर्ष और भी तीव्र हो

गया है। लोकतंत्र ने माना कि राजा और प्रजा के बीच का संघर्ष को लोकतंत्र ने स्थायी रूप से स्वीकार कर लिया है समाजवाद ने धनवानों और निर्धनों के बीच के संघर्ष को अपना आधार बनाया। वर्ग बदल गये लेकिन संघर्ष समाप्त नहीं हुआ, क्योंकि पश्चिम के विचार की सभी प्रणालियां डार्विन के सबसे योग्य के अस्तित्व के सिद्धान्त से निकलती हैं। संसार संघर्ष के कारण नहीं बल्कि समन्वय और सहयोग से चलता है। यदि आप एक लोकतांत्रिक है तो किसी और के द्वारा नहीं बल्कि अपनी अंतरात्मा के द्वारा निर्देशित किया जाए। जनता के लिए खड़े होने वाले राजनीतिक दल भी जनता के बल पर खड़े होते हैं। अगर लोग चाहते हैं कि कोई उन्हें झुकाए नहीं तो लोगों को उन्हें अपनी ताकत देनी चाहिए। यह लोग ही हैं जो राजनीतिक दलों के निर्माता हैं, और उसके माध्यम से उनके राजनीतिक भाग्य का निर्माण करते हैं। एक अच्छी पार्टी कौन सी है? स्पष्ट रूप से वह जो केवल व्यक्तियों का एक संग्रह नहीं है, बल्कि एक विशिष्ट उद्देश्यपूर्ण अस्तित्व वाला एक निकाय है जो सत्ता पर कब्जा करने की अपनी इच्छा से अलग है। ऐसे पार्टी के सदस्यों के लिए राजनीति सत्ता एक साधन नहीं होना चाहिए। बल्कि पार्टी के प्रति आत्मसमर्पण होना चाहिए जो हमें अनुशासन की ओर ले जाती है। एक पार्टी के लिए अनुशासन वही है जो एक समाज के लिए धर्म है। विभिन्न राजनीतिक दलों को अपने लिए एक दर्शन विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। उनका विचार था कि पार्टी कुछ स्वार्थी उद्देश्यों के लिए एक साथ जुड़े व्यक्तियों का समूह मात्र न बनने दें। यह भी आवश्यक है कि दल के दर्शन को दल के घोषणा पत्र के पन्नों तक ही सीमित न रखा जाए। सदस्यों को इसे समझना चाहिये और इसे अमल में लाने की लिए खुद को समर्पित करना चाहिए।

जहाँ तक अनुशासन का प्रश्न है वह केवल दल को पूर्ण स्वास्थ्य में रखने के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि सामान्य रूप से लोगों के आचरण पर इसके प्रभाव के कारण भी महत्वपूर्ण है। एक सरकार मुख्य रूप से संरक्षण और सुरक्षा का एक साधन है न कि विनाश या परिवर्तन का। यह लोगों में कानून के प्रति श्रद्धा पैदा करने की मांग है कि कानून के संरक्षण बनने की इच्छा रखने वाले पक्ष खुद इस दिशा में एक उदाहरण पेश करें। लोकतंत्र का सार स्वशासन की भावना और क्षमता है। यदि दल स्वयं शासन नहीं कर सकते है तो वो समुदाय में स्वशासन की इच्छा उत्पन्न करने की आशा कैसे कर सकते हैं? जहाँ एक ओर समुदाय के लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता की गारंटी और रक्षा करना आवश्यक है, वही दूसरी ओर व्यक्ति के लिए स्वेच्छा से सामान्य इच्छा को प्रस्तुत करना वांछनीय है। इसलिए दलों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने सदस्यों के लिए एक आचार संहिता निर्धारित करें और उसका सख्ती से पालन करें। निर्वाचक का कर्तव्य एक बुरा उम्मीदवार के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का एक साधन नहीं है, बल्कि उनकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए एक जनादेश है।[8]

निष्कर्ष -

अपने राष्ट्र के विकास को जागृत करने वाले एकात्म मानववाद के प्रणेता सच्चे देभक्त एवं हमारे पथ-प्रदर्शक पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के कृत्यों एवं विचाराधाराओं ने हमारे देश को आसमान की बुलंदियों तक पहुँचाता है और वे निश्चित रूप से भारतीय राजनीति चिंतन और राजनीतिक मुद्दों में गहरी रूचि रखने वाले व्यक्ति थे। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के राजनीतिक एवं सामाजिक चिंतन की मूल अवधारणा एकात्म मानववाद के विचार के साथ जुड़ी हुई है। पंडित दीनदयाल जी का मानना था कि पश्चिमी सामाजिक, राजनीतिक विचार के प्रमुख समुदाय पश्चित में ही मानवीय स्थिति को मौलिक रूप से सुधारने में विफल रहे है। इस कारण उनका मानना था कि राष्ट्रवाद, लोकतंत्र और समाजवाद, उनकी राय में कई भारतीयों द्वारा अनजाने में स्वीकार किए गए थे। इन्होंने अच्छे जीवन के लिए मानवीय खोज को केवल, आंशिक समाधान ही प्रदान किये हैं और राष्ट्रवाद ने 'विश्व शांति' के लिए खतरा पैदा कर दिया। जब लोकतंत्र को पूंजीवाद से जोड़ा गया, तो उसने शोषण को शासन के साथ जोड़ दिया गया। समाजवाद, लोकतंत्र-पूंजीवाद से जुड़ी अवधारणा की प्रतिक्रिया ने व्यक्ति की गरिमा और स्वतंत्रता को लूट लिया है। इन राजनीतिक अवधारणाओं में से प्रत्येक पर बल देते हुए उन्होंने कहा था, कि इन अवधारणाओं ने भौतिक अधिग्रहण को बढ़ा दिया। इस तरह लालच, वर्ग विरोध, शोषण और सामाजिक अराजकता को प्रेरित किया। इसके परिणामस्वरूप उन्होंने न केवल सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की विचारधाराओं के लिए कैडर तैयार किया बल्कि अपने द्वारा प्रतिपादित आदर्शों को साकर करने के लिए संगठन का एक मजबूत आधार भी दिया।

वर्तमान समय में निःसंदेह पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने जिस पार्टी की स्थापना हेतु प्रयास किया था, वह अब पूर्ण बहुमत के साथ न केवल केन्द्रीय स्तर पर सत्ता में है, बल्कि भारत के आधे से अधिक राज्यों में भी उनकी सरकारें हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास के मूल मंत्र के साथ लगातार काम कर रहें, जो कि अंत्योदय के इक्कीसवीं सदी के विचार के अलावा और कुछ नहीं है। यह विचार दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा आधी सदी पहले प्रतिपादित किया गया थ। वर्तमान भाजपा सरकार के कार्यक्रम और नीतियाँ दीनदयाल उपाध्याय के आदर्शों पर आधारित हैं जिन्हें अब प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली सरकार साकार करने का प्रयास कर रही है। वर्तमान सरकार समाज के वंचित वर्गों को सशक्त बनाने और सभी के लिए सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास कर रही है, इसलिए दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का अध्ययन करना अधिक अनिवार्य हो जाता है।

अतः वर्तमान राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में दीनदयाल उपाध्यय के विचारों की महत्ता और ज्यादा बढ़ गई है क्योंकि उनका दर्शन इस मिट्टी में गहराई से निहित है और दर्शन के निशान इस देश के सांस्कृतिक

लोकाचार में पाए जा सकते हैं जो हजारों साल पुराने हैं।

संदर्भ सूची

1. सिंह, धीरज (2018), 'पं0 दीनदयाल उपाध्याय प्रणीत एकात्म मानव दर्शन : एक परिचय', शोध मंथन, खण्ड-प्ग् , नम्बर 4, अनु बुक्स, दिल्ली, पृ0 40
2. नेने विनायक वासुदेव (1990), पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन', खण्ड-2, एकात्म मानव दर्शन, नई दिल्ली, सुरुचि प्रकाशन, प्रथम संस्करण, पृ0 9
3. पाण्डेय, अरूणकांत (2018), 'एकात्म मानववाद के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय', स्वराज पब्लिकेशन, गाजियाबाद (उ0प्र0), पृ0 82
4. पाल, सत्येन्द्र कुमार (2023), 'आधुनिक भारत में पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद की उपादेयता', अनुसंधान वाटिका, साहित्य कला विज्ञान तथा संस्कृति अनुसंधान समिति उत्तरकाशी, (उत्तराखण्ड) खण्ड 13, अंक 2, जुलाई, पृ0 202
5. यादव, आशीष कुमार (2019), 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्तित्व एवं कृतित्व', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एण्ड सोशल साइंस रिसर्च, वॉल्यूम-5, प0ृ 149
6. सिंह, सुरेन्द्र (2022), 'पं0 दीनदयाल उपाध्याय : एक समग्र अध्ययन', पूर्व मीमांसा, सनातन धर्म कालेज, अंबाला कैंट, हरियाणा, पृ0 93
7. उपाध्याय, दीनदयाल (2004), 'एकात्म मानववाद', जागृति प्रकाशन, नोएडा (उ0प्र0), पृ0 25
8. शर्मा, महेशचन्द्र (2017), 'आधुनिक भारत के निर्माता पंडित दीनदयाल उपाध्याय, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
9. बाबू, संजय (2018), एकात्म मानववाद, स्वरांजलि पब्लिकेशन, गाजियाबाद (उ0प्र0), पृ0 88
10. कौशिक, कमल (2016), 'पं0 दीनदयाल उपाध्याय के दार्शनिक और शैक्षिक विचार एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता', मयूर इण्टरप्राईजेज, नई दिल्ली, पृ0 108
11. बघेल, सरन सिंह (2021), 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय : जीवन दर्शन व एकात्म मानव दर्शन का रेखांकन', बीएफसी पब्लिकेशन्स प्रा0लि0, गोमती नगर, लखनऊ-226010
12. 'निशंक', रमेश पोखरिया (2016), 'आधुनिक भारत के चाणक्य पंडित दीनदयाल उपाध्याय', डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा0) लि0, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली